

भृङ्गेश संहिता

No-18

शारदा

(59)

84

18
M.K. Manu

21 3. 21 611 801

21/11-9

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible][illegible]

श्रीः
हृदी
म००

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]

यदुल्लङ्घयन् भद्रः भद्रमुत्कीर्णयन् भद्रं भद्रपञ्चकयुगेव य
 जेवद्वयपञ्चकैः ॥ भद्रमुत्पन्नमविम्वरेभद्रमभद्रः ॥ १७
 गङ्गाभमभद्रं भुवि देवी प्रपुष्टु ॥ १८ भद्रं भुवि प्रपुष्टु
 भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ १९ भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २० भद्रं भुवि प्रपुष्टु
 भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २१ भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २२ भद्रं भुवि प्रपुष्टु
 भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २३ भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २४ भद्रं भुवि प्रपुष्टु
 भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २५ भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २६ भद्रं भुवि प्रपुष्टु
 भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २७ भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २८ भद्रं भुवि प्रपुष्टु
 भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ २९ भद्रं भुवि प्रपुष्टु ॥ ३० भद्रं भुवि प्रपुष्टु

ममंभंयुक्तमेवभाष्यमर्थेतिविपलंभवकाभयूर
 मिवाहोभजीहोममप्रेतिभमुत्पन्नमुपरः। (मैकदुभष्ट
 उमेकाविहोभमुत्तंरुगउ। रणिरः सुउभप्रइभकेइवंम
 मपुयउ। मुठगीमुठमप्रेतिकृविहोभदुडिमाकुप्री
 भाभउयंगउभपिपुष्टभदेसुभाभउभुमीवमेहोइगं
 भुजैठवेवगः। पुन्नीमभप्रइभमुष्टुगुगीविभभउग
 विभभप्रइगुगीमगदः। विविभभउ। (प्रपभगीउधे

श्रीः
 ५५
 ७७

मुमीभमुत्तंरुगउ। विपमंयुक्तंरुमकीपुमंवरं
 उध। कपुमंवरंरुविहोमंवरंउध। (होमंवरंरुम
 कभमंवरंउध। (प्रमंवरंरुमउमंवरंउध। (प्रम
 मंवरंरुविहोमंवरंरुपुय। (प्रमंवरं। प्रमउमं
 कभउध। (उमंवरंरुमभमंवरंरुपुय। (वतभंवर
 मंरुविमिगंमंवरंउध। (उमपुपुष्टुमिगंविहोवर
 रभा। (उमंवरंरुमंवरंरुमिगंविहोवर। (प्रमभंवरंउध

कदमं नकुजं गीरं भूषणं वरुणं विदुषं धर्मं भद्रं भद्रं
 कनिकं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 गिरं नकुजं गीरं भूषणं वरुणं विदुषं धर्मं भद्रं भद्रं
 नकुजं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 वरुणं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 विदुषं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 धर्मं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं

श्री
 ९९

वभनं विदुषं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं
 भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं भद्रं

श्रीः
हृन्म
५७

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

ममीपेडुमदुकिरेपिये॥ मरेमभुमभीपडुचुडुमुक्तिमवपु
 युः॥ कयक्तेमंविनयेवियडुक्तेविहडिभकमी॥ भगव
 म्मुडीकुंडमुडेमुक्तिमवपुयाडा॥ कुपुपुममिकंमेवि
 मेरेमंमभुपुमयेडा॥ इकलपुएमेमुवेडाकुठेदगिमकु
 नि॥ पुडादिधवलं दहुउचयेदिहमेवमः॥ केपुपुममुडे
 मभुडडिमहुंवरुमिडे॥ कयीकभीहुगीमल्लुमीपुहुगी
 विमेपडः॥ डिमभकुमुडेमेविमुडागुमभविगे॥ मुवेक
 मेमदमेविहउपल्लयल्लुममी॥ ठल्लुएमुमपुडिउ
 केमभुपुमः॥ वहुवकववहुवपुल्लमंवेदुपियेमुडा
 रुवदिरेमेवउचयेमुहुगल्लय॥ मभुमंल्लुडेनिहमभुल
 लुमेवमुमी॥

ॐ
भुक्त
मक्त
न
३०

ॐ

ॐ
भुव
मह

Digitized by e

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow. Digitized by eGangotri

所

ॐ
म
वमद
मं
म
३

CC-0 Sharada Manuscripts at Rashtriya Sanskrit Sansthan Lucknow, Digitized by eGangotri

६
 मु
 व
 ३९

श्रीकृष्णभक्तकेभूतेभामभूतेविभुमुतादिभक्तमदेसनि
 श्रीकृष्णभक्तमभूते॥ श्रीभामभक्तयेविभुंमिवंवापिभदेसु
 रि॥ इकलभक्तभूतेभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ मुकुलभ
 भदेसुइइकलभक्तयेविभुंमिवंवा॥ विभुंमिवंवापिभदेसु
 निवपद्मीभक्तपित॥ उद्यमिभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भमभक्तयेविभुंमिवंवापिभदेसु॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 मपिवंवाभक्तमभूते॥ भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 पापमदुष्टा॥ भमभक्तयेविभुंमिवंवापिभदेसु॥ इभ

विभुंमिवंवापिभदेसु॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 यीभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ
 भुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभुमुकुलभुयत्रभमयः॥ इभ

मुह
कमल
न
भा

95

५

भक्तिं गच्छति तत्र उवः ॥ ३ ॥ पंथा भक्तिवत् निष्कमिदु मृज
 प्रियो ॥ ४ ॥ लेमृते किमु सुखे ददु प पितृ ॥ भगवत् गुरुरा
 विस्ते विस्ते येमृते ॥ भयमु सुखे ददु मृज ॥ पि न लेमृते
 ... वर सुव भुज यं भम भुज ॥ मृज गुरुरा भु
 कं ॥ ये वर भुज ॥ मृज गुरुरा भुज ॥ मृज गुरुरा भु
 भयमु न क लेमृते मृज वर भुज ॥ मृज गुरुरा भु
 सुखि ॥ भुज मृज मृज ॥ मृज मृज मृज ॥ मृज मृज मृज
 विमृः ॥ पिके मे प वर मे वि ॥ के भुज विमृः ॥ विमृः ॥ विमृः
 मृज गुरुरा भुज ॥ मृज गुरुरा भुज ॥ मृज गुरुरा भुज
 १०

१० क मृज

पलकः

दिप्रमुने
 रवि के इय कृते मय न के भुज मय न की के दिप्रमुने इयः
 मय न मय न मय न ॥ ३ ॥ मय न मय न मय न ॥ मय न मय न मय न
 भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज
 लक्षि ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज
 नीलक ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज
 ५ ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज
 उहे उके विमृः ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज
 उव मृज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज ॥ भुज गुरुरा भुज
 उहे मय न मय न मय न मय न मय न मय न मय न मय न

कमिदिपूरं मुठनी। मपुल्लं तडं पंपं प० नरु मृदु मृति ।
 उति मृदु मृदु मिस मुकुं मभा पुभा ॥ निह मृ यी यती उ पु वेर
 इर किल पुकः ॥ पम मृ कष मने रे वरु मृ प्र कः ॥
 डिम त्रे प म न ग डे वे रि क पु र सी दि उः ॥ ठ डि पु क मृ म डि
 पू ष मं र मृ ल क म ॥ म सी उ म च म मृ क मि मृ उ ग म
 मि नु कः ॥ मृ व री मि य र यी क मने वि व लि उः ॥ म र
 म र न म र द ग डि उ ले क मे द पा द गः ॥ म च क उ र य म ने मि जी यं व र
 ल क म ॥ म मे डु री दि उ रे वि वि मृ मे ण किल पु कः ॥ मि र
 उ र प मि नु उ र ग म प्र यः ॥ म र क म गी प्र र न ग डे गी उ व र मृ म र